अयोध्या की दीपावली
दीपोत्सव-2018

अयोध्या

सरयू के तट पर बसी अयोध्या भगवान श्रीराम की जन्मभूमि तथा क्रीडास्थली रही है। यह अत्यन्त प्राचीन नगरी है। सर्वप्रथम वेदों में इसका उल्लेख आया है। अथर्ववेद के दसवें मण्डल में कहा गया है कि अयोध्यापुरी अष्टचक्र एवं नवद्वारों से युक्त, देवताओं द्वारा सेवित तथा स्वर्ग की भाँति समृद्धि सम्पन्न है–

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गोज्योतिषावृतः।।

'वशिष्ठ संहिता' में इसी हिरण्यमय कोश वाली अयोध्या को हिरण्या, चिन्मया, जया, अयोध्या, नन्दिनी, सत्या, राजिता और अपराजिता इन आठ नामों से अभिहित किया गया है जो गोलोक के अन्तःपुर में स्थित है–

वरेण्या सर्वलोकानां हिरण्या चिन्मया जया।
अयोध्या नन्दिनी सत्या राजिता अपराजिता।।
कल्याणी राजधानी या त्रिपादस्य निराश्रया।
गोलोक हृदयस्था च संस्था सा साकेतपुरी।।

अथर्ववेद में वर्णित इसी अयोध्या का ही विस्तारपूर्वक वर्णन उपनिषदों, संहिताओं, रामायण, महाभारत, जैन एवं बौद्ध साहित्य तथा संस्कृतादि ग्रन्थों में हुआ है जिसका आश्रय लेकर सगुणोपासक रामभक्तों ने साकेतपुरी के दिव्य स्वरूप का भावपूर्ण विवेचन कर अपने आराध्य श्रीराम के परमधाम के रूप में उसे मान्यता प्रदान की है। ऋषि भरद्वाज की पृच्छा पर वशिष्ठ जी ने दिव्य अयोध्या के बारे में इस प्रकार कहा–
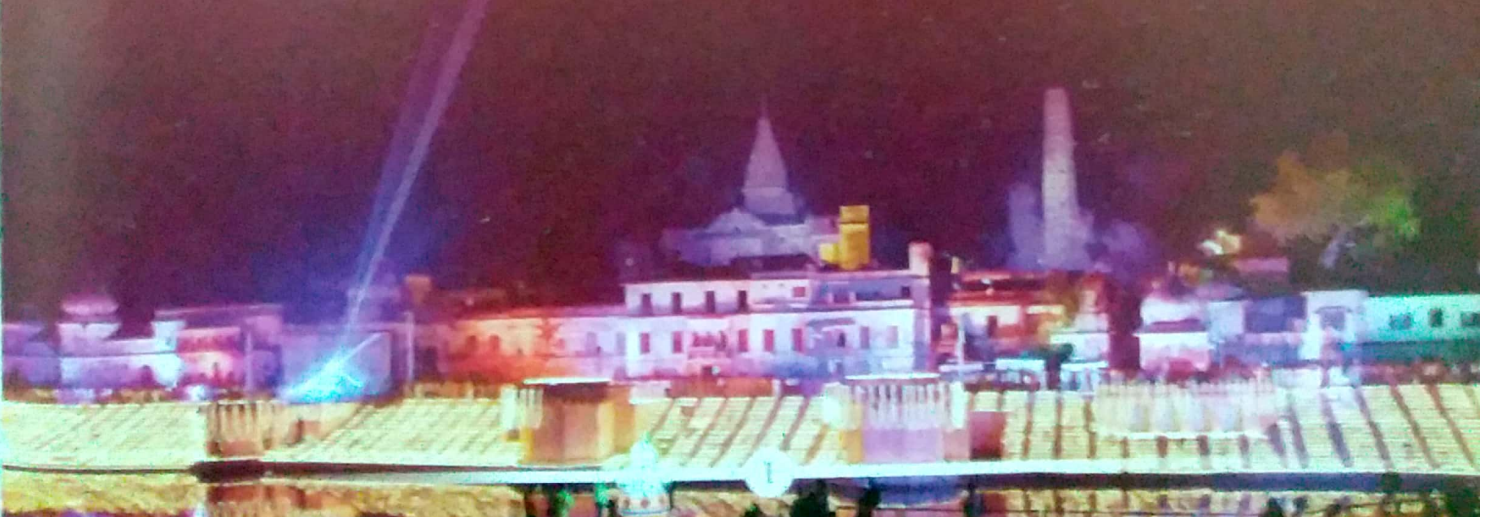
अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी।
यस्यांशेन बैकुण्ठो गोलोकादि प्रतिष्ठितः।।
यत्र श्रीसरयूनित्यां प्रेमवारिप्रवाहिणी।
यस्यां अंशेन सम्भूता विरजादिसरिद्वराः।।

भगवान शिव ने माता पार्वती से अयोध्या के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा, कि हे प्रिये! अयोध्यापुरी पावन सरयू नदी के दक्षिण तट पर स्थित है, जिसकी रक्षा ब्रह्मा जी बुद्धि से, विष्णु जी चक्र से और स्वयं मैं अपने त्रिशूल से सदा करता रहता हूँ। 'अयोध्या' में ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का निवास है। समस्त उपपातकों के साथ ब्रह्महत्यादि महापातक भी इससे युद्ध नहीं कर सकते, इसलिए इसे अयोध्या कहते हैं–

अकारो ब्रह्मरूपस्तु, धकारो रुद्र उच्यते।
यकारो विष्णुरूपश्च, 'अयोध्या' नाम राजते।।
सर्वोपपातकैर्युक्तः ब्रह्महत्यादि पातकैः।
न योध्या शक्यते यस्मात्तामयोध्यां ततो विदुः।।
(स्क0 वैष्ण0 अयो0)

अतः अयोध्या के माहात्म्य का वर्णन करने की क्षमता शेष और शारदा में भी नहीं है। इसका महत्व अवर्णनीय है। मान्यता है कि पहले अयोध्या बैकुण्ठ में थी। महाराज मनु ने इसे पृथ्वी पर लाने हेतु बैकुण्ठनाथ से याचना की। तब भगवान बैकुण्ठनाथ (विष्णु) ने उनकी प्रार्थना पर बैकुण्ठ से लाकर भूलोक में उन्हें अयोध्या दी थी–

सुनत विष्णु बैकुण्ठ ने दीन अयोध्या आनि।
मनु लाये महिलोक महँ श्रीपति को तनु जानि।।
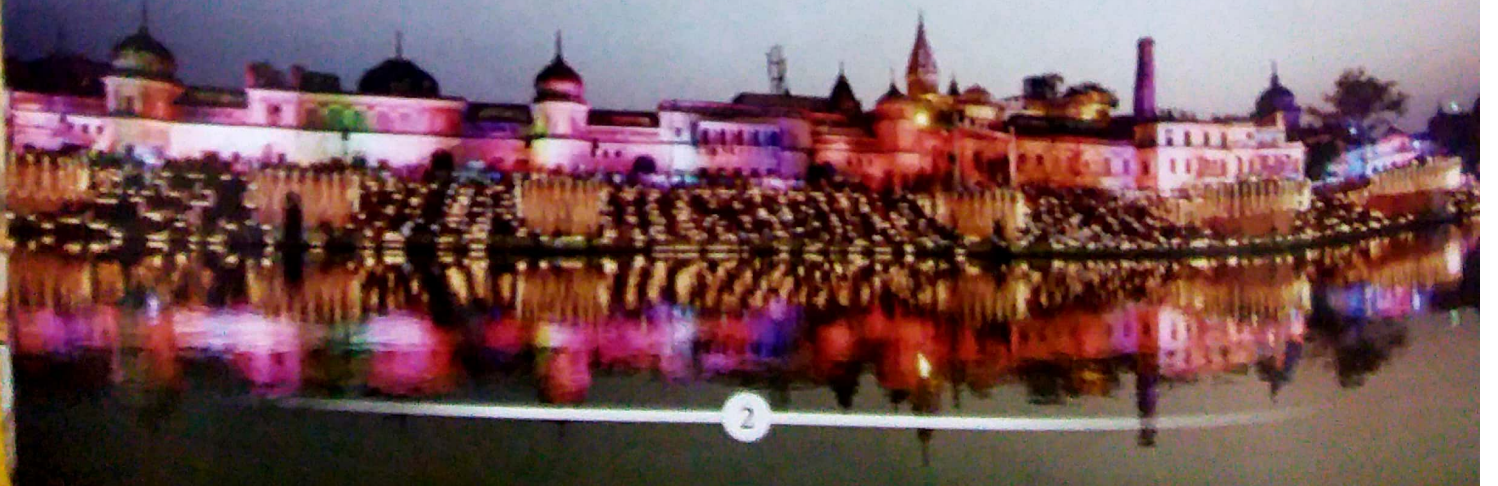
चिरकाल तक अयोध्या की सेवा कर अन्त में महाराज मनु ने उसे राजा इक्ष्वाकु को सौंप दिया, जहाँ पर कालान्तर में इक्ष्वाकु वंश की इसी परम्परा में भगवान राम ने स्वयं अवतार लिया। अतः यह सभी तीर्थों में श्रेष्ठ तथा परम मुक्तिधाम है। भगवान विष्णु के अंगों के वर्णनक्रम में ऋषियों ने अयोध्या को भगवान का मस्तक कहा है–

विष्णोर्पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरीं,
नाभिर्द्वारवतीं पठन्ति हृदयं मायापुरी योगिना।
ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरा नासाग्रे वाराणसी–
मेतद् ब्रह्मपदं वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरी मस्तके।।

वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि अयोध्या भूमण्डल की लोकविश्रुत नगरी थी जिसे महाराज मनु ने बसाई थी–

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।।

लंका विजय कर अयोध्या वापस आये भगवान राम, लक्ष्मण एवं माता सीता के स्वरूपों का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (दीपोत्सव– 18 अक्टूबर, 2017)

राम कथा पार्क अयोध्या में रामलीला की कलात्मक प्रस्तुति

स्कन्द पुराण के अनुसार यह सुदर्शन–चक्र पर बसी है। 'भूतशुद्धितत्त्व' के अनुसार यह प्रभु श्रीराम के धनुषाग्र पर स्थित है–

'श्रीरामधनुषाग्रस्था अयोध्या सा महापुरी।'

संहिता–ग्रन्थों में परायोध्या का विस्तृत वर्णन है। शिवसंहिता में परलोक में स्थित अयोध्या को श्रीराम के दिव्य भोगों की भूमि तथा पृथ्वी पर स्थित अयोध्या को उनकी लीलाभूमि कहा गया है–

भोगस्थानं परायोध्या लीलास्थानंत्विदं भुवि।
भोगलीलापती रामो निरंकुशविभूतिकः।।

वाल्मीकि रामायण में अयोध्या को कोसल महाजनपद का एक भाग माना गया है, जो कोसल महाजनपद की राजधानी थी तथा सरयू नदी के तट पर बसी हुई थी। यह 12 योजन लम्बी, 3 योजन चौड़ी (48 कोस X 12 कोस) क्षेत्रफल में विस्तीर्ण थी –

कोसलो नामविदितः स्फीतः जनपदो महान्।
निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतोधनधान्यवान्।।
आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्त महापथा।।

'भुशुण्डि रामायण' में अयोध्या को गरुण जी द्वारा मुक्तिदायिनीपुरी कहा गया है। अयोध्या के माहात्म्य पर प्रकाश डालते हुए मुनि वशिष्ठ कहते हैं–

आदौ तवैव भविकावलिदायिनीय,
दिव्या पुरी परममंगलभूरयोध्या।
आस्ते परा सकल कल्मषनाशितोया,
पुण्यां विभाति सरयू सरितांवरिष्ठा।।

स्कन्द पुराण तथा पद्मपुराण में अयोध्या के माहात्म्य का विस्तृत वर्णन मिलता है। स्कन्द पुराण के वैष्णवखण्ड में सूत जी ने अयोध्या के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि अयोध्यापुरी परम पवित्र है। पापी मनुष्यों को इसकी प्राप्ति असम्भव है, जिसमें साक्षात् हरि स्वयं निवास करते हो, वह पुरी भला किसके द्वारा सेवनीय नहीं है? अमरावती के समान दिव्य एवं तपोनिष्ठ सन्तों से युक्त यह अयोध्यापुरी भगवान् के वामपादांगुष्ठ से उद्‌भूत पवित्र सरिता सरयू के दक्षिण तट पर बसी है। पद्मपुराण के पातालखण्ड में ध्वजों से भूषित दुर्ग के माध्यम से

अयोध्या में प्रथम दीपोत्सव–2017 के अवसर पर
इण्डोनेशिया के कलाकारों द्वारा रामलीला की सांस्कृतिक प्रस्तुति

अयोध्या की भव्यता का उल्लेख है। महाभारत के वनपर्व में रामोपाख्यान के अन्तर्गत् अयोध्या का वर्णन एक पावन तीर्थरूप में किया गया है। रुद्रयामलतंत्र में अयोध्या के माहात्म्य के साथ–साथ वहाँ के 152 तीर्थों का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। अयोध्या के महल, प्रासाद सभी रत्नजड़ित हैं। रत्नसिंहासन से कनक भवन की ओर जाने पर सीताजी के कनक भवन का वर्णन है जो अनुपमेय एवं परम रमणीक है–

तस्मादुत्तरदिग्भागे स्थानञ्चैव मनोहरम्।
सीतायाः भवनं दिव्यंनाम्ना कनकमण्डपम्।।
कनक भवन विख्यात जग, राजहिं जँह सिय राम।
तेहि की उपमा जोग नहिं, अखिल लोक सुखधाम।।

भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रणीत 'रामचरितमानस' रामकथा की एक कालजयी कृति है, जिसकी रचना संवत् 1631 में अयोध्या में प्रारम्भ की गई थी। इस गौरव ग्रन्थ

अयोध्या में प्रथम दीपोत्सव–2017 के अवसर पर
इण्डोनेशिया के कलाकारों द्वारा बाली रामलीला की सांस्कृतिक प्रस्तुति

में अयोध्या (अवध अथवा अवधपुरी) की महिमा तथा उसके आध्यात्मिक स्वरूप का जिस तरह भावपूर्ण चित्रण किया गया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है–

राम धामदा पुरी सुहावनि, लोक समस्त विदित जग पावनि।।
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ, यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ।।

अर्थात् अवध या अयोध्या भगवत् धाम है। यह श्रीराम को अत्यन्त प्रिय है। भगवान श्रीराम के प्राकट्य मात्र से अयोध्या पवित्र हो जाती है, मोक्षदा हो जाती है क्योंकि वहाँ श्रीराम प्रभु का नित्य सानिध्य मिलता है। यही कारण है कि भक्तों के मन में अवध धाम (अयोध्या) में बसने की उत्कट इच्छा हमेशा बनी रहती है–

कवनिउँ जनम अवध बस जोई। राम परायन सो परि होई।।

अवध का रहस्य परम गुप्त है। इसे वही व्यक्ति जान पाता है, जिसे भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त हो जाय–

'अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं राम धनु पानी।।'

अयोध्या में प्रथम दीपोत्सव–2017 के अवसर पर
इण्डोनेशिया के कलाकारों द्वारा रामलीला की सांस्कृतिक प्रस्तुति

अयोध्यापुरी के दर्शन मात्र से ही सब पाप दूर हो जाते हैं। वहाँ के वन, उपवन, तालाब, बावड़ी तथा नगर की शोभा अत्यन्त भव्य एवं रमणीक है, जिसके ऐश्वर्य का वर्णन नहीं किया जा सकता तथा जो भक्तजनों के मन को बरबस आकृष्ट करती है–

कहि न जाइ कछु नगर विभूती। जनु एतनिय बिरंचि करतूती।।
पुरशोभा कछु बरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई।।
देखत पुरी अखिल अघ भागा। वन उपवन वाटिका तड़ागा।।

यह पुरी परम दिव्य, विकार रहित तथा जन्म–मरण, रोग–वियोग एवं पाप–पुण्य से मुक्त है–

सकल विकार रहित सो धामू। सब लोकन ते परम ललामू।।
जनम मरण नहिं रोग वियोगा। नहिं तहँ पाप पुण्य कर भोगा।।
अहंकार कामादि विकारा। नहिं तहँ प्राकृत नियम विकारा।।

अयोध्या नित्य एवं सर्वमंगलरूपा है जैसे कि मिथिला। चूँकि राम और सीता अनादि हैं, इसलिए अवध (अयोध्या) भी अनादि है–

अयोध्या यथा नित्या सर्वमंगल रूपिणः।
तथैव मिथिला नित्या सर्वमंगल विग्रहः।।
राम अनादि, सीता अनादि तब अवधि अनादी।
तुम्हरी पुरी अनादि सकल कह वेद के वादी।।

Scanned with CamScanner
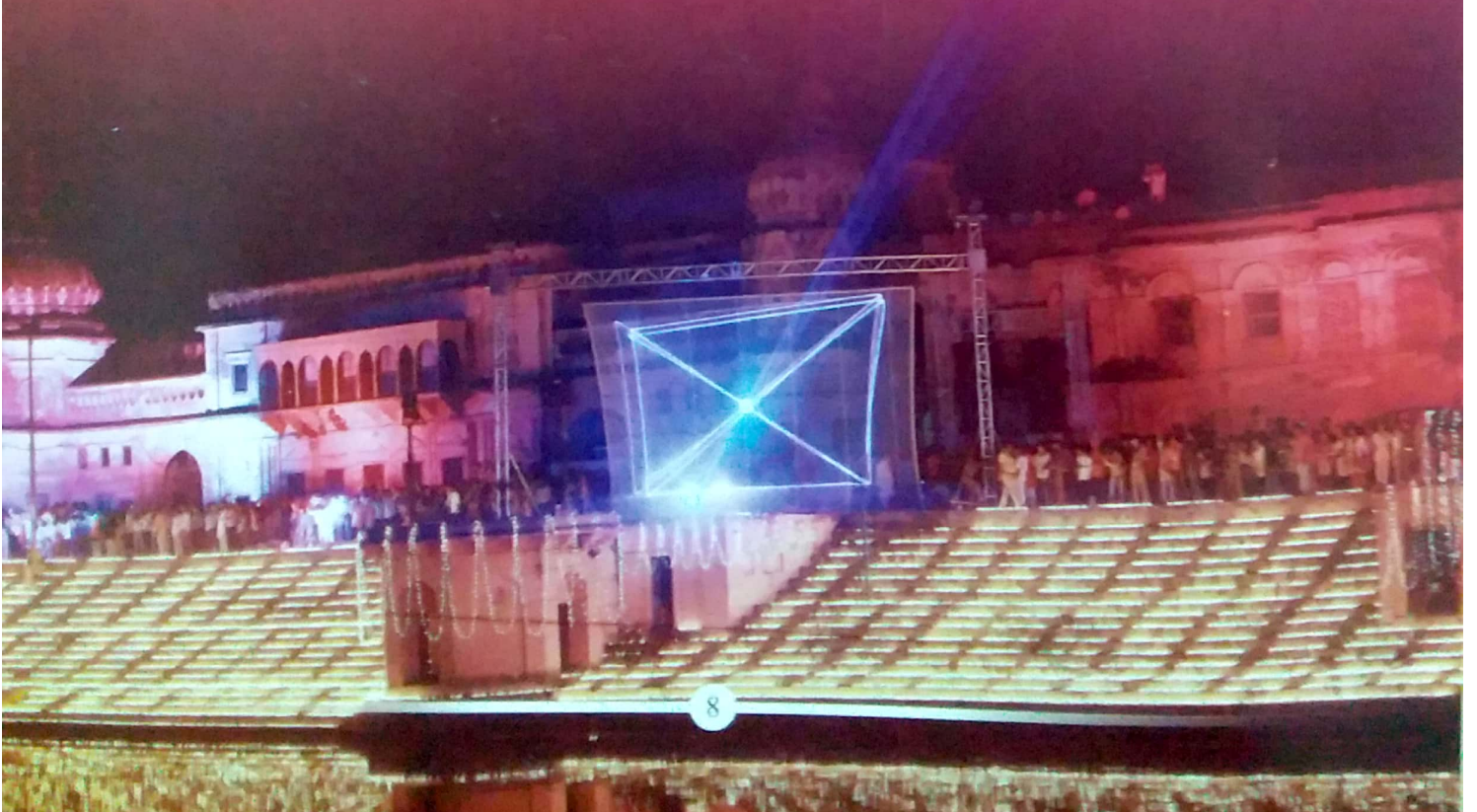
महराजदास कृत 'श्री सीताराम श्रृंगार रस' में आध्यात्मिक अयोध्या का वर्णन मिलता है—

विरजा तट इक नगर सुहावन। परम रम्य मुनिवर मन भावन।।
दिव्य अयोध्या ताकर नामा। दम्पतिधीश जहाँ अभिरामा।।

कवि पलटूदास के अनुसार अवधपुरी भगवान का वह शुभ धाम है, जो कलि के पापों को नष्ट कर देता है—

अवधपुरी शुभ धाम, जगत में परम सुहावन।
रामकोट शुभ ठाम, सदा कलि—कलुष नशावन।।

गोलोक की साकेत और भूलोक की अयोध्या एक ही मानी गई है। अन्तर मात्र यही है कि प्रथम (साकेत) अवतारी श्रीराम की भोगस्थली तथा द्वितीय (अयोध्या) उनकी लीला स्थली है—

जो साकेत अयोध्या सोई। नाम भेद नहिं कारन कोई।।
भोगस्थल साकेत ललामा। लीलास्थल अवध सुधामा।।
अवध धाम तनु तजि नर वामा। पावहिं यह साकेत सुधामा।।

(सियालाल शरण 'प्रेमलता')

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि काशी में कोटि कल्प बसने तथा मथुरा में एक कल्प बसने का जो फल है, वह सरयू (तट पर बसी अयोध्या) में एक निमिष बसने के भी तुलनीय नहीं है—

कोटि कल्प काशी बसै मथुरा कल्प निवास।
एक निमिष सरयू बसै तुलै न तुलसीदास।।

अयोध्या में भगवती सीता द्वारा निर्मित एक सीता कुण्ड है जिसमें स्नान करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है। ब्रह्मकुण्ड भी है जो ब्रह्मा द्वारा निर्मित माना गया है। ब्रह्मकुण्ड से पूर्वोत्तर ऋणमोचन तीर्थ सरयू में है जहाँ लोमश जी ने विधिपूर्वक स्नान–ध्यान किया था। सहस्रधारा से पूर्व 636 धनुष (1272 गज) तक 'स्वर्गद्वार' कहलाता है जहाँ पर किये गये जप, तप, हवन, दर्शन, दान, ध्यानादि से अक्षय फल प्राप्त होता है–.

दिनांक 18 अक्टूबर 2017 दीपोत्सव के अवसर पर हर्ष उल्लास से सराबोर अयोध्या में रोशनी का एक दृश्य

सहस्रधारामारभ्य पूर्वतः सरयूजले।
षट्त्रिंशदधिका प्रोक्ता धनुषां षट्शती मितिः।।
स्वर्गद्वारस्य विस्तारः पुराणज्ञैर्विशारदैः।
स्वर्गद्वारे परा सिद्धिः स्वर्गद्वारे परा गतिः।।
जप्तं दत्तं हुतं दृष्टं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
ध्यानमध्ययनं सर्वं दानं भवति चाक्षयम्।।
(स्क० वै० अयो०)

अयोध्या में पुण्यसलिला सरयू में गोप्रतार तीर्थ है, जिसमें भगवान श्री राम समस्त अवधवासियों सहित साकेत लोक में–वैष्णवतेज में प्रविष्ट हुए थे। यहाँ जो कोई स्नान करता है, वह निश्चय ही योगिदुर्लभ श्रीराम धाम को प्राप्त होता है–

गोप्रतारे नरो विद्वान् योऽपि स्नाति सुनिश्चितः।
विशत्यसौ परं स्थानं योगिनामपि दुर्लभम्।।

(स्क० वै० अयो०)

सबको तारने के कारण ही यह तीर्थ गोप्रतारक कहलाया। और तो और, साक्षात् तीर्थराज प्रयाग भी यहाँ सब पापों को धोने के लिए कार्तिक मास में स्नान करने आते हैं–

यत्र प्रयागराजोऽपि स्नातुमायाति कार्तिके।
शुद्ध्यर्थं साधुकामोऽसौ प्रयागो मुनिसत्तम।।

(स्क० वै० अयो०)

इस प्रकार, अयोध्या का माहात्म्य अकथनीय एवं वर्णनातीत है। यह भगवान श्री राम की जन्मभूमि ही नहीं, वरन् मानव मात्र के उद्धार हेतु एक सिद्धस्थली है जहाँ का हर घर एक मन्दिर है। यहाँ मनीषियों की साधनाएँ, ऋषियों मुनियों के अध्यात्म–चिन्तन, पुण्य सलिला सरयू का समागम आदि सबने मिलकर इसे प्राणवान बना दिया हैं। अपनी अनन्त महिमा के कारण ही अयोध्या का नाम सप्तमोक्षदायिनी पुरियों में अग्रगण्य है–

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

अन्यत्र च –

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः।।

अपरंश्च–

परब्रह्म धरि चारि रूप खेले बनि भाई।
आदिशक्ति श्रीसीय जहाँ दुलहिनि बनि आई।।
जहँ मणिगिरि गुरुज्ञान प्रेमभक्ती की रवानी।
पाप ताप संताप हरत सरयू महरानी।।
मनु वाल्मीकि तुलसी प्रथित प्रथम काव्य सरि जहाँ बहि।
अब मानस पीयूष बह जै कुमार श्री अवधमहि।।

(पं0 श्रीराम कुमार दास जी महराज)

अयोध्या के प्रमुख धार्मिक स्थल

सात मोक्षदायिनी पुरियों में प्रथम पुरी अयोध्या है। यह मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के पूर्वजों–सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी रही है। भगवान श्रीराम की अवतार–भूमि होकर तो अयोध्या साकेत (गोलोक) हो गई। मान्यता है कि भगवान श्री राम के गोलोक प्रस्थान करते समय उनके साथ अयोध्या के सभी नर–नारी, पशु–पक्षी, यहाँ तक कि कीट–पतंग भी उनके दिव्य धाम में चले गये। अतः पहली बार त्रेता युग में ही अयोध्या उजड़ गई। पुनः श्रीराम के पुत्र कुश ने इसे बसाया था।

वर्तमान अयोध्या को बसाने का श्रेय महाराज चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को जाता है। विक्रमादित्य ने अयोध्या में 360 मन्दिर बनवाये। पर वह वैष्णव थे तथा भगवान श्री राम के आदर्शों से प्रभावित थे। कनक भवन मन्दिर तथा जन्मभूमि मन्दिर का स्थान उन्हीं के समय का कहा जाता है।

प्रमुख मन्दिर

श्रीराम जन्मभूमि– भगवान श्रीराम की जन्मभूमि की खोज गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने की थी। महाराज विक्रमादित्य ने इस स्थान पर एक भव्य एवं विशाल मन्दिर का निर्माण कराया था जिसमें 84 कसौटी के खम्भे बने थे। जनश्रुति है कि इन खम्भों को हनुमान जी लंका से उखाड़कर अयोध्या लाये थे। इस मन्दिर में श्रीरामलला जी की भव्य प्रतिमा स्थापित थी। इस मन्दिर में ऊँचे–ऊँचे कई शिखर थे। मन्दिर में श्रीरामलला का पूजन–अर्चन तथा वैदिक रीति से अनुष्ठान आदि कार्य नित्य प्रति चलते थे। मान्यता है कि इसके दर्शन करने से सौ कपिला गायों के दान के बराबर पुण्य तथा अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

कनक भवन– जनश्रुति है कि मिथिला के राजा के जनक की पुत्री जानकी जब ब्याह कर अपने ससुराल अयोध्या आई तब महारानी कैकेयी ने कनक–निर्मित अपने महल को उन्हें मुँह–दिखाई में भेंट किया था। कनक भवन अपनी भव्यता एवं दिव्यता के लिए विख्यात था, जिसकी उपमा अन्य किसी से नहीं की जा सकती थी।

कनक भवन विख्यात जग, राजहिं जँह सियराम।
तेहि की उपमा जोग नहिं, अखिल लोक सुखधाम।।

कनक भवन को श्री राम का अन्तःपुर या सीता जी का महल कहते हैं। इस मन्दिर में श्रीराम व किशोरी (सीता) जी की भव्य मूर्तियाँ स्थापित हैं। सिंहासन पर जो बड़ी मूर्तियाँ हैं, उनके आगे श्री सीता–राम की छोटी मूर्तियाँ हैं। छोटी मूर्तियाँ ही प्राचीन कही जाती हैं। रसिक सम्प्रदाय के सन्तों की इस मन्दिर में विशेष निष्ठा रही है।

गुप्तकाल में महाराजा विक्रमादित्य ने अयोध्या की खोज के पश्चात् कनक भवन मन्दिर का पुर्निर्माण कराया था जो कालान्तर में भग्न हो गया। तब से काफी समय तक यह स्थल भग्नावस्था में पड़ा रहा। कालान्तर में ओरछा राज्य की रानी वृषभानु कुँवरि जी ने उसी स्थान पर एक भव्य मन्दिर पुनः निर्मित कराया, जो आज भी विद्यमान है। मन्दिर के गर्भगृह के पास ही शयन–स्थल है जहाँ भगवान राम शयन करते हैं। मन्दिर के मुख्य द्वार पर **भीलनी शबरी** की मूर्ति स्थापित है। सायंकाल फव्वारों के मध्य शबरी की प्रतिमा अत्यन्त रम्य एवं दर्शनीय है। चैत्र रामनवमी पर इस मन्दिर में विशेष आयोजन किया जाता है।

हनुमान गढ़ी– हनुमान गढ़ी अयोध्या के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मन्दिर पुण्य सलिला सरयू के दाहिने तट पर स्थित है। कहा जाता है कि जो श्रद्धालु श्रीराम के दर्शन हेतु अयोध्या आता है, वह अपनी पूजा–अर्चना सर्वप्रथम हनुमान जी के इसी मन्दिर से प्रारम्भ करता है। यह कथ्य इस अवधारणा पर आधारित है कि 'राम दुवारे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे' अर्थात् हनुमान जी की कृपा के बिना किसी को श्रीराम का आशीर्वाद नहीं मिलता। जनश्रुति है कि पहले इस मन्दिर के स्थान पर एक गुफा थी, जिसमें रामभक्त हनुमान रहा करते थे तथा अपने आराध्य भगवान श्री राम की नगरी अयोध्या की रक्षा किया करते थे। वर्तमान मन्दिर इसी गुफा के ऊपरी भाग (टीले) पर स्थित है, जिसमें हनुमान जी के बाल रूप की प्रतिमा अपनी माँ अन्जनी के साथ स्थापित है। यह प्रतिमा बहुत ही

हनुमान गढ़ी स्थित हनुमान जी का विग्रह

छोटी है। इसकी ऊँचाई मात्र 6 इंच है। मन्दिर तक पहुँचने के लिए भक्तों को 76 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। इस मन्दिर के बारे में मान्यता है कि जो श्रद्धालुगण जिस अभीष्ट की कामना से अन्जनी सुत श्री हनुमान के दर्शन करते हैं, उनके मनोरथ अवश्य पूर्ण होते हैं। हनुमान गढ़ी की व्यवस्था हेतु चार पट्टियाँ हैं– हरद्वारी, वसंतिया, उज्जैयिनिया एवं सागरिया। इन चारों पट्टियों के भिन्न–भिन्न महन्त होते हैं जो गद्दीनशीन कहलाते हैं। मन्दिर में प्रतिदिन कर्मनिष्ठ ब्राह्मणों द्वारा हनुमान जी का विधिवत पूजन–अर्चन होता है। लड्डुओं तथा फूल–मालाओं से उन्हें भोग चढ़ाया एवं प्रसाद वितरण किया जाता है। प्रत्येक सांयकाल मानस–प्रवचन होता है जो इस मन्दिर का विशेष आकर्षण है।

सीता रसोई :– जन्मभूमि के उत्तर में जन्म–स्थान तथा सीता रसोई सम्मिलित रूप से एक ही मन्दिर के अलग–अलग भाग में स्थित है। मन्दिर के निचले प्रकोष्ठ में बायीं ओर सीढ़ी के रास्ते 'सीता रसोई' की ओर जाने का रास्ता है, यहाँ पर सीता जी की एक प्रतिमा भी स्थापित है। रसोई कक्ष में पाषाण निर्मित चौका, बेलन व पीठिका आदि रखे हुए हैं। इस मन्दिर में एक ओर महाराजा दशरथ सहित चारो राजकुमारों की मूर्तियाँ स्थापित हैं। मन्दिर में जगन्नाथ जी, बलभद्र जी तथा सुभद्रा जी की मूर्तियाँ भी प्रतिष्ठित की गई हैं जो अतीव रम्य तथा आकर्षक हैं।

सीता कूप :– जन्मभूमि के आग्नेय कोण में सीताकूप स्थित है। इस कूप का जल मूल नक्षत्र में पैदा होने वाले बच्चों की मूल–शान्ति के कार्य में काम आता है। कहा जाता है कि बहुत पहले यह कूप महाराजा दशरथ के महल के अन्तः भाग में स्थित था, जिसकी विवाह पर्व पर पूजा होती थी। कालान्तर में इसे सीता जी के नाम पर सीता कूप कहा जाने लगा।

कौसल्या भवन :– जन्मभूमि के उत्तर–पूर्व दिशा में महाराज दशरथ की प्रधान महिषी रानी कौशल्या का भवन स्थित है। विक्रमादित्य के समय निर्मित भवन काल चक्र के अनुसार ध्वंसावशेष मात्र था जिसके स्थान पर लगभग 250 वर्षो पूर्व वर्तमान भवन का निर्माण कराया

गया। इस मन्दिर में महारानी कौशल्या की शिशु राम को लिए प्रसन्न मुद्रा में एक मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति के अलावा राम, सीता, हनुमान, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न की भी मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। चैत्र मास की रामनवमी पर यहाँ पर भव्य आयोजन होता है।

सुमित्रा भवन :– रामजन्म भूमि के दक्षिण में थोड़ी दूरी पर सुमित्रा भवन स्थित है, जो सीताकूप के निकट ठीक सामने पड़ता है। इसी भवन में महारानी सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न जी का जन्म हुआ था। मध्यकाल में जन्मभूमि के निकट होने के कारण यह भी ध्वंसावशेष रह गया। इस स्थल पर अब केवल 'सुमित्रा भवन' लिखा एक पत्थर गड़ा है।

कैकेयी कोप भवन :– यह मन्दिर कौशल्या भवन के पूर्व में स्थित है। इसमें कैकेयी की लेटी हुई प्रतिमा तथा समीप में वल्कल वेषधारी श्री राम, लक्ष्मण तथा सीता जी की प्रतिमा भी स्थापित है। समीप में महाराज दशरथ के आमात्य सुमंत जी की भी मूर्ति स्थापित है। इस मन्दिर में हनुमान जी की भी एक विशाल मूर्ति प्रतिष्ठित है। कैकेयी कोप–भवन के प्रकोष्ठ मे भगवान के 24 अवतारों की प्रतिमाएँ भी स्थापित हैं।

रत्नसिंहासन :– कनक भवन के दक्षिण में यह मन्दिर अवस्थित है जहाँ पर भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था। किंवदन्ती है कि मध्यकालीन शासकों के समय जो विवाद अनिर्णीत रह जाते थे, उसका फैंसला यहीं पर होता था। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा एवं ख्याति आज भी यथावत है।

लव–कुश मन्दिर :– यह मन्दिर हनुमान गढ़ी से जन्मभूमि जाने वाले मार्ग पर स्थित है, जिसमें श्रीराम के दोनों पुत्रों– लव और कुश की मूर्तियाँ स्थापित हैं। साथ ही महर्षि वाल्मीकि जी की मूर्ति भी विराजमान है। इस मन्दिर के दायें एवं बायें भाग में क्रमशः राम कचेहरी मन्दिर, श्री जगन्नाथ मन्दिर तथा श्री रंग महल मन्दिर है, जो अयोध्या के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में गिना जाता है।

श्री छोटी देवकाली मन्दिर :– यह मन्दिर हनुमान गढ़ी के उत्तर दिशा में इटौवा ताल को जाने वाली गली में स्थित है। छोटी देवकाली जी को अवध की ग्रामदेवी माना जाता है। वस्तुतः यह मिथिला वाली गिरिराज किशोरी पार्वती जी ही हैं जिनका पूजन माता सीता जी नित्य प्रति किया करती थीं। विवाह के पश्चात् सीता जी ससुराल जाते समय अपनी आराध्या देवी गिरिजा को भी

साथ अयोध्या लाई थी। महाराज दशरथ ने सप्तसागर (इटौवा) के निकट एक भव्य मन्दिर बनवाकर इनकी स्थापना की थी। इस मन्दिर में जानकी जी कनक भवन से आकर नित्य–प्रति माँ गिरिजा की विधिपूर्वक पूजा किया करती थीं। मन्दिर में श्री देवकाली जी की केवल मुखभाग की दिव्य प्रतिमा स्थापित है। मान्यता है कि इस मन्दिर में जो भक्त दर्शन करने आते हैं, उनकी मनोकामनाएँ माँ देवकाली अवश्य पूर्ण करती हैं।

मत्तगयन्द जी का स्थान :– यह स्थल 'कनक भवन' के उत्तर–पूर्व में स्थित है। मत्तगयन्द जी विभीषण जी के पुत्र थे। इन्हें रामकोट (दुर्ग) के उत्तर फाटक को कोतवाल कहा जाता है। किंवदन्ती है कि यदि किसी व्यक्ति की कोई वस्तु खो जाती थी, तो यदि वह यहाँ खिचड़ी की मन्नत मानें, तब खोई हुई वस्तु उसे मिल जाती थी। पूर्व में यह मन्दिर त्रिकोणाकार निर्मित था जिसमें गदाधारी काले पत्थर की मूर्ति स्थापित थी किन्तु कालान्तर में यह ध्वस्त हो गया। सन् 1926 में उसी स्थान पर मत्तगयन्त जी का एक नया मन्दिर निर्मित कराया गया जिसमें लाल रंग के पत्थर की प्रतिमा स्थापित है। ऐसी धारणा है कि अयोध्या–दर्शन हेतु आये श्रद्धालुओं को पुण्य तभी प्राप्त होता है जब वे अयोध्या स्थित मत्तगयंद जी के इस मन्दिर का दर्शन कर लेते हैं।

रामकोट :– अयोध्या में अब रामकोट (श्रीराम का दुर्ग) ध्वंसावशेष मात्र है। कभी यह दुर्ग बहुत विस्तृत था। जनश्रुति है कि इस दुर्ग में 20 द्वार थे, किन्तु अब तो चार स्थान ही उसके अवशेष माने जाते हैं– हनुमान गढ़ी, सुग्रीव टीला, अंगदटीला एवं मत्तगयन्द।

स्वर्गद्वार :– इस घाट के समीप श्री नागेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर है। कहा जाता है कि इस मन्दिर में कुश द्वारा स्थापित की गई मूर्ति है। इसी मन्दिर को पाकर महाराज विक्रमादित्य ने अयोध्या के विभिन्न दर्शनीय स्थलों की खोज की तथा उनका जोर्णोद्धार कराया। नागेश्वरनाथ के पास ही एक गली में श्री रामचन्द्र जी का मन्दिर है जिसमें एक ही काले पत्थर में श्रीरामपंचायतन की मूर्तियाँ हैं। बाबर के जन्मस्थान मन्दिर के तोड़ने पर पुजारियों ने वहाँ से मूर्ति लाकर यहाँ स्थापित कर दी। स्वर्गदार घाट पर ही यात्री पिण्डदान करते हैं।

तुलसीचौरा :– यह स्थल अयोध्या में दन्तधावन कुण्ड के समीप उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित है। यह एक अत्यन्त भव्य व मनोरम मन्दिर है। इस मन्दिर में गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रतिमा स्थापित है। यहीं पर बैठकर तुलसीदास जी ने संवत् 1631 में 'मानस' की रचना प्रारम्भ की थी। इसे 'मानस जन्मभूमि' भी कहा जाता है।

दन्तधावन कुण्ड मन्दिर :– यह मन्दिर हनुमानगढ़ी चौराहे से रामघाट तुलसी स्मारक जाने वाले मार्ग पर स्थित है। यह मन्दिर वैष्णव के बड़गल शाखा का है। मन्दिर में रघुनाथ जी, लक्ष्मण जी तथा माता जानकी की प्रतिमा स्थापित है। मन्दिर के गर्भगृह में इन्ही देवताओं की छोटे आकार वाली प्रतिमाएँ भी हैं जिन्हें मन्दिर से बाहर झाँकी, उत्सव या रथयात्रा के अवसर पर निकाला जाता है। मन्दिर अत्यन्त भव्य तथा मनोरम है।

श्री कालेराम जी का मन्दिर :– यह मन्दिर स्वर्गद्वार मुहल्ले में स्थित नागेश्वर नाथ मन्दिर से सटकर स्थित है जिसमें महाराज विक्रमादित्य कालीन मूर्तियाँ हैं जो पहले श्री रामजन्मभूमि में स्थापित थीं। जनश्रुति है कि बाबर के रामजन्मभूमि तोड़ने के समय पुजारियों ने भगवान की मूर्तियों को सरयू के जल में प्रवाहित कर दिया ताकि ये प्रतिमाएँ आक्रामणकारी आतताइयों के हाथों में न जा पावें। सौभग्यवश एक दक्षिणात्य ब्राह्मण को ये मूर्तियाँ लक्षमण सहस्रधारा में प्राप्त हुईं। कालान्तर में इन्हें एक स्थान पर स्थापित कर दिया गया। दक्षिण भारतीय ब्राह्मण द्वारा निर्मित इस मन्दिर में आज भी उत्सवों पर महाराष्ट्रीय हरिकीर्तन आदि का भव्य आयोजन समय–समय पर होता है। महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों की विशेष निष्ठा इस मन्दिर में रहती है। अयोध्या का यह मन्दिर अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं विख्यात है।

नागेश्वरनाथ मन्दिर :– बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक श्री नागेश्वरनाथ हैं। मान्यता है कि इनकी स्थापना भगवान राम के पुत्र महाराजा 'कुश' ने की थी। इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना में

एक कथा है– कहा जाता है कि एक दिन महाराजा कुश पुण्यसलिला सरयू में जब स्नान कर रहे थे तब उनके एक हाथ का कंगन सरयू के जल में गिर गया। उस कंगन को नाग कन्या उठा ले गई। काफी खोज करने पर जब कंगन नहीं मिला तब कुपित होकर कुश ने सरयू के जल को सुखा देने की इच्छा से अग्निशर

का संधान किया, जिसके कारण सभी जलीय जीव–जन्तु व्याकुल होने लगे। तब नागराज ने स्वयं वह कंगन महाराज कुश को भेंट किया तथा उनसे अपनी कन्या का विवाह कर दिया। महाराज कुश ने उस नागकन्या से विवाह करने के पश्चात् स्मारक रूप में उस स्थान पर नागेश्वरनाथ जी की स्थापना की। उसी स्थान पर वर्तमान में श्री नागेश्वरनाथ जी का एक विशाल मन्दिर सरयू तट पर लक्ष्मण सहस्रधारा के पूर्व भाग में स्थित है। प्रत्येक त्रयोदशी को लाखों की संख्या में श्रद्धालु यहाँ आते हैं तथा सरयू में स्नान कर ज्योतिर्लिंग पर जल चढ़ाते एवं विधि–विधान से पूजन–अर्चन करते हैं।

उपरोक्त स्थलों के अतिरिक्त **मणि पर्वत** जिसके बारे में कहा जाता कि वहाँ हनुमान जी द्वारा लायी जा रही संजीवनी बूटी वाले द्रोण पर्वत का एक हिस्सा गिर गया था, आज 65 फुट ऊँचा स्थान है, जो दर्शनीय है।

श्री राम और सीता को समर्पित **शीश महल**, राम वनवास के समयावधि में भरत जी जिस स्थान पर रहें वह **नन्दिग्राम** तथा भगवान राम को समर्पित **त्रेता के ठाकुर मन्दिर** भी दर्शनीय और श्रद्धा के केन्द्र हैं। **वाल्मीकि रामायण भवन** और आधुनिक युग के **तुलसी उद्यान**, **तुलसी स्मारक भवन** भी दर्शनीय हैं।

वैसे तो अयोध्या में बहुत से मन्दिर, घाट तथा दर्शनीय स्थल हैं जिनका यहाँ उल्लेख समीचीन नहीं जान पड़ता किन्तु ये प्राचीन नहीं हैं। इनकी बहुलताओं के कारण अयोध्या को मन्दिरों का नगर भी कहा जाता है।

विषय सामग्री स्रोत:-
अथर्ववेद, संहिताओं, विभिन्न पुराणों एवं अन्य साहित्य में अयोध्या सम्बन्धी वर्णन।

प्रस्तुति : श्री बी०एन० शुक्ल
एडीशनल कमिश्नर, वाणिज्य कर
(सेवानिवृत्त)

दिनांक 18 अक्टूबर, [illegible] दीपोत्सव के
अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दृश्य
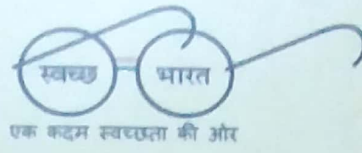
कुम्भ
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
उत्तर प्रदेश सरकार
उत्तर प्रदेश
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257, गोलागंज, लखनऊ